१५

धरुण आङ्गिरसः।अग्निः। त्रिष्टुप्।

प्र वे॒धसे॑ क॒वये॒ वेद्या॑य॒ गिरं॑ भरे य॒शसे॑ पू॒र्व्या॑य।

घृ॒तप्र॑सत्तो॒ असु॑रः सु॒शेवो॑ रा॒यो ध॒र्ता ध॒रुणो॒ वस्वो॑ अ॒ग्निः॥ ५.०१५.०१

वेधसे- मेधाविने। कवये- सूक्ष्मदर्शिने। वेद्याय- ज्ञातव्याय। पूर्व्याय- पुराणाय। यशसे- कीर्तिमते। गिरम्- मन्त्रम्। भरे- धारयामि। घृतप्रसत्तः- पूतनवनीतोपलक्षितपूतावगमनेन प्रसन्नः। असुरः- प्राणदः। सुशेवः- सुखकरः। रायः- सम्पदः। धर्ता- धारकः। धरुणः- हविषां धारकः। वस्वः- शरण्यः। अग्निः- पावकः सर्वभूतहितक्रतुः॥१॥

ऋ॒तेन॑ ऋ॒तं ध॒रुणं॑ धारयन्त य॒ज्ञस्य॑ शा॒के प॑र॒मे व्यो॑मन्।

दि॒वो धर्म॑न्ध॒रुणे॑ से॒दुषो॒ नॄञ्जा॒तैरजा॑ताँ अ॒भि ये न॑न॒क्षुः॥ ५.०१५.०२

धरुणे- धारके। दिवो धर्मे- स्वर्गे। सेदुषः- निषण्णान्। नॄन्- नेतॄन्। अजातान्- जन्मरहितान् देवान्। जातैः- जन्मसहितैर्मर्त्यैः। ये। अभि- आभिमुख्येन। ननक्षुः- व्याप्नुवन्ति। ते। यज्ञस्य- दानस्य देवपूजायाः सङ्गतिकरणस्य। शाके- कर्मणि। परमे व्योमन्। ऋतेन- प्रकृतिनियत्या। धरुणम्- धारकम्। ऋतम्- धर्मम्। धारयन्त- अधारयन्॥२॥

अ॒ङ्हो॒युव॑स्त॒न्व॑स्तन्वते॒ वि वयो॑ म॒हद्दु॒ष्टरं॑ पू॒र्व्या॑य।

स सं॒वतो॒ नव॑जातस्तुतुर्यात्सि॒ङ्हं न क्रु॒द्धम॒भितः॒ परि॑ ष्ठुः॥ ५.०१५.०३

तन्वः- स्वतनूः। अंहोयुवः- अंहसा वियोजिका यजमानाः। पूर्व्याय- पुराणायाग्नये। महत्। दुस्तरम्। वयः- हव्यम्। वि तन्वते- विस्तारयन्ति। सः। संवतः- सङ्गतान्शत्रून्। नवजातः- अभिनवः। तुतुर्यात्- हिंस्यात्। क्रुद्धम्। सिंहम्। न- इव। अभितः- परितः। ष्ठुः- अतिष्ठन्॥३॥

मा॒तेव॒ यद्भर॑से पप्रथा॒नो जनं॑जनं॒ धाय॑से॒ चक्ष॑से च।

Dr. Rangaji
WEBOLIM

वयोवयो जरसे यद्दधानः परि त्मना विषुरूपो जिगासि॥ ५.०१५.०४

पप्रथानः- प्रख्यातः। मातेव- जननीव। धायसे- धारणायै। चक्षसे- दर्शनाय। जनंजनम्। भरसे- धारयसि। दधानः- धारयन्। वयोवयः- अन्नम्। जरसे- जाठराग्निरूपेण जीर्णं करोषि। त्मना- आत्मना। विषुरूपः- बहुरूपः। सर्वान्। परि- परितः। जिगासि- गच्छसि॥४॥

वाजो नु ते शवसस्पात्वन्तमुरुं दोघं धरुणं देव रायः।
पदं न तायुर्गुहा दधानो महो राये चितयन्नत्रिमस्पः॥ ५.०१५.०५

देव- द्योतक। ते- तव। शवसः- बलस्य। अन्तम्- सम्पूर्तिरूपम्। उरुम्- विस्तीर्णम्। दोघम्- दोग्धारम्। रायः- सम्पदः। धरुणम्- धारकम्। वाजः- अन्नम्। नु- क्षिप्रम्। पातु- रक्षतु। तायुः- स्तेनः। पदम्- द्रव्यम्। गुहा- रहस्यस्थाने। न- यथा धारयति तथा। दधानः। महः- महते। राये- धनाय। अत्रिम्- स्वोपासकम्। चितयन्- ज्ञापयन्। अस्पः- अपूरयः॥५॥

Dr. Ranganji
WEBOLIM